Dr. Archana Bharti
Guest Faculty, MMHAPU
MJMC/SEM 1/Paper 101
Date- 15/06/2021

Indian communication Theory
भारतीय संचार सिद्धांत

सचांर मानव समाज की प्रमुख आवश्यकता है। प्रत्येक युग अथवा कालखंड में मनुष्य एवं मानव समाज संचार प्रक्रिया के प्रति सजग रहा। समाज का विकास और संचार का विकासक्रम दोनो साथ–साथ विकसित हुआ। प्रत्येक युग में संचार से जुड़े लोगों एवं संचार माध्यमों तथा संचार की कला के प्रति लोगों का आकर्षण रहा है। समय के साथ–साथ समाज और संचार दोनों में परिवर्तन हुए हैं। संचार के विकास के मूल सूत्र एवं मूल प्रवृत्तियां हमें प्राचीनतम ज्ञान राशि वैदिक ज्ञान में मिलती है। ऋषियों ने जिस ज्ञान का साक्षात्कार किया वही धरोहर वैदिक ज्ञान राशि के रूप में हमें प्राप्त हैं। चूंकि वैदिक ज्ञान का सम्बंध भारतीय समाज एवं ज्ञान परम्परा से है, इसलिए भारतीय समाज और इसकी विकास–यात्रा भी प्राचीन है।

वैदिक ज्ञान से जुड़ी भारतीय ज्ञान परम्परा का अगर हम अध्ययन करें तो हम संचार के विभिन्न प्रकारों का ज्ञान मिलता है। संचार पर अध्ययन काफी हुआ है परन्तु इस पर चिंतन कम हुआ है। इस कारण संचार के दर्शन का पक्ष पूर्ण रूप से अस्तित्व में नहीं आ सका। संचार के सिद्धांत का क्षेत्र विकसित जरूर हुआ है, लेकिन इस पर पश्चिम का प्रभाव और उसका वर्चस्व अधिक देखने को मिलता है। इसलिए संचार सिद्धांत को सिर्फ पश्चिमी देन अर्थात् पाश्चात्य विचारकों और उनके द्वारा प्रतिपादित विभिन्न संचार सिद्धांतों पर की जाती है। लेकिन भारतीय संदर्भ की बात करें तो विभिन्न ग्रंथों पर हुए अध्ययन और शोध कार्यों से स्पष्ट होता है कि संचार के ज्यादातर सिद्धांत भारतीय ज्ञान परंपर में असंगठित रूप से उपलब्ध है। उदाहरणस्वरूप *भरतमुनि का नाट्यशास्त्र, नारद के भक्ति सूत्र, श्रीमद्भागवतगीता का विश्वरूप, कठोपनिषद में यम–नचिकेता संवाद, महाकवि कालिदास की रचनाएं, विदुर नीति, अशोक का जनसंपर्क, ओशो का प्रवचन*, आदि अनेक ग्रंथ रचनाएं। भारतीय ज्ञान परंपरा अपने में महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ रहा है। अगर पाश्चात्य की बात करें तो यहां संचार एक सूचना प्रक्रिया से जुड़ी व्यवस्था है। भारतीय परम्परा में संवाद चर्चा का प्रभाव सभी जगह विद्यमान है। भारतीय ज्ञान परम्परा में श्रुति ज्ञान का विस्तार अपने में महत्वपूर्ण तथा श्रेष्ठ रहा है। भारतीय संचार पद्धति में अंतःवैयक्तिक, अंतरवैयक्तिक संचार के अलावा समूह संचार के भी साक्ष्य मौजूद है। संचार की भारतीय अवधारणा को अगर समझना हो तो इसके लिए सबसे पहले आत्म–चेतना और आत्म–दृष्टि का विकास किया जाना आवश्यक है।

भारतीय संचार दर्शन संदेश केन्द्रित है। पश्चिम का दर्शन मीडिया एवं लाभ केन्द्रित है। अनादि काल से भारत ज्ञान प्रधान तथा पश्चिम मीडिया तकनीकी प्रधान रहा है। अगर भारतीय प्राचीन साहित्य को देखें तो स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में जितने भी संचार के वर्गीकरण किए गए हैं, उनका विकास भारतीय परिवेश में हुआ है। जिसे हम आभ्यंतर अथवा अंतःवैयक्तिक, अंतर्वैयक्तिक, समूह एवं जन संचार में वर्गीकरण करते हैं। भारतीय परंपरा में प्राचीन साहित्य के विकास का भी यही क्रम है। वैदिक साहित्य को हम देखें तो यह वास्तव में आभ्यंतर संचार अथवा Intrapersonal Communication का साहित्य है। और यह संचार की प्रक्रिया अधिक विकसित थी। इसी कारण वैदिक मंत्रों के जो दृष्टा थे वह ऋषि थे। वर्तमान में हम जिस अंतरवैयक्तिक संचार अथवा Interpersonal Communication की बात करते हैं इसके प्रमाण हमें उत्तर वैदिक साहित्य जैसे महाकाव्य एवं पुराण में देखने को मिलते हैं। जिसका विकास नारद–वाल्मीकि, गणेश–व्यास शिव–काली/पार्वती आदि के परस्पर बातचीत के द्वारा अस्तित्व में आया। प्राचीन भारतीय साहित्य के विकासक्रम में समूह संचार अथवा Group Communication की प्रक्रिया का विकास नाट्य साहित्य, रामलीला, कृष्णलीला, मुद्राराक्षस एवं संगीतशास्त्र के विकास के साथ हुआ। जनसंचार वास्तव में जनसंचार माध्यमों के साथ–साथ अंतःवैयक्तिक, अंतरवैयक्तिक एवं समूह संचार के द्वारा समाज में फैलनेवाली प्रक्रिया है। यह प्रवृत्ति हमें प्राचीन भारतीय साहित्य एवं समाज के अंतिम चरण में दिखाई देती है। मूर्ति उपासना पद्धति, कुंभ, अशोक के शिलालेख, स्तंभलेख, भित्तिलेख और मंदिर आदि इसके उदाहरण हैं। वास्तव में श्रुति ज्ञान को जनसंचारित करने की प्रक्रिया आरंभ से ही विद्यमान है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अंतःवैयक्तिक संचार, अंतरवैयक्तिक संचार, समूह संचार एवं जनसंचार की प्रवृत्ति भारतीय साहित्य में वैदिक साहित्य और उत्तरवर्ती साहित्य में देखने को मिलती है। प्राचीन भारतीय मनीषा ने संचार के विविध पक्षों पर विचार किया था और उस पर प्रयोग भी हुए हैं। अशोक और रजनीश ओशो के संचार सिद्धांत उसी प्राचीन संचार सिद्धांत के विकास हैं। आज भी भारतीय संचार का व्यापक क्षेत्र रहस्यों से घिरा हुआ है जिस पर शोध अध्ययन करना आवश्यक है।

*****